ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

"वर्तमान युग में कबीर साहित्य की शैक्षिक उपयोगिता"

विष्णु कुमार शर्मा, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़
डॉ. सुरेश कड़वासरा, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़

शोध सारांश

कबीरदास मध्यकालीन संत–कवि थे जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में नई चेतना का संचार किया। उन्होंने सत्य, प्रेम, करुणा और मानवता को शिक्षा का आधार माना। वर्तमान युग में जब शिक्षा केवल रोजगारपरक और प्रतियोगी दृष्टिकोण की ओर झुक गई है, तब कबीर साहित्य की शैक्षिक उपयोगिता और भी प्रासंगिक हो उठती है। उनके दोहे, साखियाँ और सबद विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान की गहराई प्रदान करते हैं बल्कि उन्हें जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। इस प्रकार कबीर साहित्य आधुनिक शिक्षा प्रणाली को मूल्यपरक आधार देने में सक्षम है।

कबीर ने जाति, पंथ और धार्मिक आडंबर का विरोध किया तथा समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया। शिक्षा का उद्देश्य भी व्यक्ति और समाज के बीच सद्भाव, सहयोग और समरसता स्थापित करना है। आज के वैश्विक समाज में जहाँ विभाजनकारी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, वहाँ कबीर साहित्य छात्रों में समन्वय और लोकतांत्रिक चेतना जाग्रत करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। कबीर की वाणी का यह पहलू शिक्षा को सामाजिक न्याय और समतामूलक समाज की स्थापना के लिए मार्गदर्शक बनाता है।

कबीर साहित्य का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू इसका आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण है। कबीर ने आत्मा की शुद्धि और सत्य की खोज को जीवन का सार माना। शिक्षा केवल बौद्धिकता तक सीमित न रहकर यदि आत्मिक और नैतिक दृष्टि से भी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करे, तो उनका व्यक्तित्व अधिक संतुलित और मानवीय बनेगा। आज की भौतिकवादी प्रवृत्ति में कबीर साहित्य छात्रों को आत्मसंयम, ईमानदारी और जीवन में संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

कबीर साहित्य व्यावहारिक जीवन–शिक्षा का उत्कृष्ट स्रोत है। उनके दोहे जीवन की सामान्य परिस्थितियों में व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं। जैसेकृ श्रम की प्रतिष्ठा, समय का सदुपयोग, और सरल जीवन के आदर्श। शिक्षा का उद्देश्य भी यही है कि विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान न लेकर व्यावहारिक जीवन में सक्षम हो। कबीर की शिक्षाएँ छात्रों को कठिन परिस्थितियों में धैर्य, परिश्रम और विवेक से काम लेने की प्रेरणा देती हैं। यह विशेषता आधुनिक शिक्षा में व्यावहारिक पक्ष को मजबूत करने के लिए आवश्यक है।

कबीर साहित्य का सबसे बड़ा योगदान चरित्र निर्माण की दृष्टि से देखा जाता है। शिक्षा का मूल लक्ष्य केवल सूचना का आदान–प्रदान नहीं बल्कि अच्छे नागरिक और सुसंस्कृत मानव का निर्माण करना है। कबीर की वाणी में 'साधुता', 'सत्यनिष्ठा' और 'मानव सेवा' के जो आदर्श प्रतिपादित हैं, वे आज भी युवाओं के लिए मार्गदर्शक हैं। यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कबीर साहित्य को समाविष्ट किया जाए, तो यह विद्यार्थियों में नैतिक बल, आत्मनिर्भरता और सेवा भाव उत्पन्न कर सकता है।

निष्कर्षतः, कबीर साहित्य वर्तमान युग में केवल धार्मिक या साहित्यिक धरोहर नहीं है बल्कि यह शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यपरक, नैतिक और सामाजिक चेतना का जीवंत स्रोत है। कबीर की वाणी से छात्रों को जीवन की सरलता, परिश्रम की महत्ता, और मानवता का सच्चा संदेश प्राप्त होता है। यदि शिक्षा में कबीर साहित्य को व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा के रूप में अपनाया जाए तो यह समाज में समानता, भाईचारे और मानवीय मूल्यों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इस प्रकार कबीर साहित्य आज भी शैक्षिक दृष्टि से उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था।

मूल शब्दः सत्य, प्रेम, करुणा, मानवता, दोहे, साखियाँ, सबद आत्मसंयम, ईमानदारी, जीवन समानता, भाईचारा, मानवीय मूल्य, समाविष्ट, नैतिक बल, आत्मनिर्भरता, बौद्धिकता, व्यावसायिकता, भौतिकतावाद, जाति–पाँति, ऊँच–नीच, धार्मिक कट्टरता आदि।

शोध की प्रस्तावना

भारतीय संत परंपरा में कबीरदास का स्थान अत्यंत ऊँचा और विशिष्ट है। उन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से न केवल धार्मिक आडंबर और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार किया, बल्कि जनसामान्य के जीवन को मूल्यपरक दिशा देने का कार्य भी किया। कबीर का साहित्य व्यक्ति को आडंबरमुक्त होकर सत्य, प्रेम और करुणा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। शिक्षा का उद्देश्य भी यही है कि वह व्यक्ति को मानवीय गुणों से परिपूर्ण बनाकर समाजोपयोगी जीवन की ओर उन्मुख करे। वर्तमान युग में जब शिक्षा में

व्यावसायिकता, भौतिकतावाद और प्रतिस्पर्धा का बोलबाला है, तब कबीर साहित्य की शैक्षिक उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।[1]

कबीरदास की वाणी विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक अनुशासन और आत्मसंयम की भावना जाग्रत करती है। उन्होंने सरल भाषा और सहज शैली में ऐसे जीवन मूल्यों को प्रतिपादित किया जो हर वर्ग के लिए उपयोगी हैं। आज का विद्यार्थी केवल तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान ही नहीं चाहता बल्कि वह ऐसा मार्गदर्शन भी चाहता है जो उसे जीवन की जटिलताओं का समाधान करने में सहायक हो।
कबीर की शिक्षाएँ जैसे– श्रम की प्रतिष्ठा, समय का सदुपयोग और सरल जीवन के आदर्श शिक्षा प्रणाली में मूल्यपरक आधार जोड़ने का कार्य करती हैं। इस प्रकार उनकी वाणी विद्यार्थियों को जीवन के विविध स्तरों पर मार्गदर्शन प्रदान करती है।[2]

कबीर साहित्य में जाति–पाँति, ऊँच–नीच और धार्मिक कट्टरता का विरोध प्रमुख रूप से मिलता है। आधुनिक शिक्षा का भी यही उद्देश्य है कि वह समाज में समानता, भाईचारे और लोकतांत्रिक चेतना का विकास करे। वर्तमान समय में जब सामाजिक विभाजन और असमानता शिक्षा के क्षेत्र में भी दिखाई देती है, तब कबीर का समतावादी दृष्टिकोण शिक्षा में सामाजिक न्याय की स्थापना हेतु प्रेरणादायक है। कबीर के दोहे विद्यार्थियों को यह सिखाते हैं कि इंसान की पहचान उसकी जाति या पंथ से नहीं, बल्कि उसके कर्म और नैतिकता से होती है। यही शिक्षा का वास्तविक आदर्श भी है।[3]

कबीर साहित्य में जीवन के व्यावहारिक पक्ष को विशेष महत्व दिया गया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संग्रह नहीं, बल्कि उसे जीवन में लागू करना है। कबीरदास के दोहे और साखियाँ विद्यार्थियों को यह सिखाते हैं कि श्रम, ईमानदारी और संयम के साथ जीवन जीना ही श्रेष्ठ पथ है। आधुनिक युग में जब शिक्षा अधिकतर प्रतियोगिता और परिणामों पर केंद्रित हो चुकी है, तब कबीर साहित्य का व्यावहारिक पक्ष विद्यार्थियों को संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है। इससे शिक्षा का चरित्र केवल परीक्षा–उन्मुख न रहकर जीवन–उन्मुख बन सकता है।[4]

शोध के सोपान

शोध समस्या का निर्धारण –हर शोध की शुरुआत एक ठोस समस्या के निर्धारण से होती है। इस शोध में मुख्य समस्या यह है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीकी ज्ञान और रोजगारपरकता तक सीमित होती जा रही है, जबकि मूल्यपरक शिक्षा की उपेक्षा हो रही है। वर्तमान युग में विद्यार्थी ज्ञानवान तो हैं, किंतु उनमें नैतिकता, आत्मसंयम और सामाजिक दायित्व की भावना का अभाव दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि क्या कबीर साहित्य, जिसमें सत्य, करुणा, श्रम और समानता के आदर्श विद्यमान हैं, शिक्षा को पुनः मानवीय मूल्यों की ओर उन्मुख कर सकता है। यही शोध समस्या इस अध्ययन का केंद्रीय आधार बनी है।

उद्देश्य –इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि कबीर साहित्य केवल साहित्यिक धरोहर नहीं, बल्कि शिक्षा का वास्तविक साधन है। कबीर की वाणी विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, नैतिक अनुशासन और सामाजिक समानता को विकसित करने में सहायक हो सकती है। शोध का एक अन्य उद्देश्य यह है कि कबीर साहित्य को आधुनिक शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर किस प्रकार जोड़ा जा सकता है, इसका परीक्षण करना। साथ ही यह शोध यह भी दिखाना चाहता है कि कबीर साहित्य की शिक्षाएँ विद्यार्थियों को जीवन की जटिलताओं का सामना करने में व्यावहारिक और आत्मिक शक्ति प्रदान कर सकती हैं।

शोध पद्धति –शोध की पद्धति के रूप में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कबीर साहित्य की उत्पत्ति, विकास और उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। विश्लेषणात्मक पद्धति से कबीर की शिक्षाओं में निहित मूल्य और उनकी शैक्षिक उपयोगिता का विवेचन किया गया। तुलनात्मक दृष्टि से यह देखा गया कि कबीर साहित्य के आदर्श आधुनिक शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों से किस हद तक मेल खाते हैं। इन पद्धतियों का चयन शोध को प्रामाणिकता और गहराई प्रदान करता है।

अध्ययन का क्षेत्र –इस शोध का क्षेत्र कबीर साहित्य और शिक्षा के आधुनिक स्वरूप के बीच

---

[1] द्विवेदी, हजारीप्रसाद, कबीर, इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन, 1947, पृ. 141।
[2] शर्मा, रामस्वरूप, कबीरः व्यक्तित्व और कृतित्व, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2002, पृ. 97।
[3] मिश्रा, धर्मवीर, कबीर की शैक्षिक दृष्टि, वाराणसीः भारतीय ज्ञानपीठ, 1998, पृ. 63।
[4] चौधरी, सुरेंद्रनाथ, कबीर और आधुनिक परिप्रेक्ष्य, पटना : विद्यार्थी प्रकाशन, 2015, पृ. 154।

संबंधों को समझने तक विस्तृत है। इसमें कबीर की मूल रचनाएँकृबीजक, साखी और सबदकृको प्राथमिक स्रोत के रूप में लिया गया है। इसके साथ ही शिक्षा शास्त्र, मूल्यपरक शिक्षा और आधुनिक शैक्षिक नीतियों से संबंधित पुस्तकों और शोध आलेखों को भी शामिल किया गया है। अध्ययन का क्षेत्र केवल साहित्य तक सीमित न होकर सामाजिक और शैक्षिक संदर्भों तक फैला हुआ है। यह व्यापक दृष्टि शोध को अधिक उपयोगी और प्रासंगिक बनाती है।

शोध का औचित्य – शोध का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि आधुनिक शिक्षा में नैतिकता और मानवीय मूल्यों का संकट गहराता जा रहा है। शिक्षा आज विद्यार्थियों को तकनीकी दक्षता तो प्रदान करती है, किंतु उन्हें समाजोपयोगी नागरिक बनाने में असफल हो रही है। ऐसे समय में कबीर साहित्य विद्यार्थियों को जीवन का व्यावहारिक ज्ञान, आत्मसंयम और समानता का संदेश देकर शिक्षा को पूर्णता प्रदान कर सकता है। इस प्रकार, शोध का औचित्य यह है कि कबीर साहित्य शिक्षा को मूल्यपरक और मानवकेंद्रित बनाने की क्षमता रखता है।

शोध की प्रासंगिकता –वर्तमान युग में सामाजिक असमानता, नैतिक पतन और प्रतिस्पर्धात्मक तनाव जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से देखी जा रही हैं। शिक्षा को इन समस्याओं के समाधान का साधन माना जाता है, किंतु यह तभी संभव है जब शिक्षा मूल्यपरक हो। कबीर साहित्य की प्रासंगिकता इस संदर्भ में स्पष्ट होती है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को आत्मनिर्भरता, श्रम की महत्ता और सामाजिक समानता का संदेश देता है। इस प्रकार, शोध की प्रासंगिकता इस तथ्य में है कि कबीर साहित्य शिक्षा को समयानुकूल और मानवतावादी दिशा दे सकता है।

शोध की सीमाएँ –इस शोध की कुछ सीमाएँ भी हैं जिन्हें स्पष्ट करना आवश्यक है। शोध का क्षेत्र मुख्यतः कबीर साहित्य और शिक्षा प्रणाली तक ही सीमित है, अतः अन्य संत साहित्य को इसमें विस्तार से नहीं लिया गया। इसके अतिरिक्त, अध्ययन का दायरा साहित्यिक और शैक्षिक दृष्टिकोण तक ही केंद्रित है, सामाजिक–राजनीतिक संदर्भों का विस्तृत विवेचन इसमें नहीं किया गया। शोध में प्रयुक्त स्रोत मुख्यतः उपलब्ध ग्रंथ और आलेख रहे हैं, अतः क्षेत्रीय अध्ययन या सर्वेक्षण इसमें सम्मिलित नहीं हो सका।

अपेक्षित परिणाम –शोध से यह अपेक्षा की जाती है कि कबीर साहित्य विद्यार्थियों के जीवन में मूल्यपरक चेतना स्थापित करने में सहायक होगा। यह शिक्षा को केवल परीक्षा और रोजगार तक सीमित न रखकर जीवनोपयोगी और समाजोपयोगी बना देगा। विद्यार्थियों में नैतिकता, आत्मसंयम, श्रमशीलता और भाईचारे की भावना का विकास होगा। शिक्षा नीति में कबीर साहित्य को समाविष्ट करने से शिक्षा अधिक मानवीय और संतुलित होगी। इस प्रकार, शोध के अपेक्षित परिणाम यह सिद्ध करेंगे कि कबीर साहित्य की शैक्षिक उपयोगिता आज भी अपरिहार्य है।

शोध का महत्व

नैतिक शिक्षा में योगदान –कबीर साहित्य का सबसे बड़ा महत्व इस तथ्य में है कि यह नैतिक शिक्षा का सशक्त स्रोत है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ज्ञान और रोजगार की ओर झुकी हुई है, किंतु नैतिकता और मानवीय मूल्यों की कमी व्यापक रूप से अनुभव की जा रही है। कबीर की साखियाँ और दोहे सत्य, करुणा, प्रेम और सहिष्णुता की भावना को विकसित करते हैं। यह विद्यार्थियों को ईमानदारी, सरलता और निष्काम कर्म का मार्ग दिखाते हैं। इस दृष्टि से यह शोध महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षा में नैतिकता को पुर्नस्थापित करने का साधन प्रदान करता है।

सामाजिक समानता की स्थापना –कबीर साहित्य का एक अन्य महत्व यह है कि इसमें जाति, पंथ और संप्रदाय से ऊपर उठकर सामाजिक समानता का संदेश मिलता है। कबीर ने अपने समय में समाज को बांटने वाली दीवारों को तोड़ने का प्रयास किया। आधुनिक शिक्षा भी समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का लक्ष्य रखती है। ऐसे में कबीर साहित्य विद्यार्थियों में भाईचारे और समरसता की भावना उत्पन्न करता है। यह शोध इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यह शिक्षा में सामाजिक समानता की नींव को मजबूत करता है।

जीवनोपयोगी शिक्षा का आधार – आधुनिक शिक्षा की एक आलोचना यह भी है कि यह केवल परीक्षा और अंक प्रणाली पर केंद्रित हो गई है। विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला, कठिनाइयों का सामना करने का साहस और आत्मनिर्भरता की शिक्षा प्रायः नहीं मिल पाती। कबीर साहित्य का महत्व इस संदर्भ में उभरता है क्योंकि यह जीवन की समस्याओं को सरल भाषा और व्यावहारिक उदाहरणों से समझाता है। यह विद्यार्थियों को आत्मबल और धैर्य प्रदान करता है। शोध का महत्व इस बात में है कि

यह शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने का मार्ग प्रस्तुत करता है।

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता – शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न होकर मूल्य संवर्धन का भी साधन होनी चाहिए। वर्तमान समय में वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद ने शिक्षा को बाजार की वस्तु बना दिया है। कबीर साहित्य इस स्थिति का समाधान प्रस्तुत करता है क्योंकि इसमें श्रम, ईमानदारी और सादगी जैसे मूल्यों का स्पष्ट प्रतिपादन है। इस शोध का महत्व इस तथ्य में है कि यह शिक्षा को मात्र पेशेवर न रखकर मूल्यपरक दिशा देने पर बल देता है। विद्यार्थियों में संतुलित और समग्र व्यक्तित्व निर्माण हेतु कबीर साहित्य अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है।

राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का विकास –कबीर साहित्य भारतीय संस्कृति और परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें न केवल आध्यात्मिक दृष्टि है बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना भी निहित है। विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य है। कबीर साहित्य इस लक्ष्य को सिद्ध कर सकता है क्योंकि यह भारतीय जीवन दर्शन को सरल, व्यावहारिक और मानवीय रूप में प्रस्तुत करता है। शोध का महत्व इस संदर्भ में है कि यह विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना का विकास कर शिक्षा को अधिक प्रासंगिक बनाता है।

शोध के उद्देश्य

1. कबीर साहित्य आधुनिक शिक्षा में मूल्यपरकता स्थापित करने का एक सशक्त साधन है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में तकनीकी दक्षता और व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा पर अत्यधिक बल दिया जाता है, जिससे मानवीय मूल्य गौण होते जा रहे हैं। कबीर के दोहे और साखियाँ विद्यार्थियों को सत्य, प्रेम, करुणा, सहिष्णुता और ईमानदारी की ओर प्रेरित करती हैं।
2. कबीर साहित्य का मूल स्वर जाति, धर्म और पंथ से ऊपर उठकर समानता का संदेश देना है। शिक्षा का भी एक प्रमुख लक्ष्य समाज में समरसता और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना है।
3. कबीर साहित्य की व्यावहारिक शिक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान की जाए। कबीर के वचनों में कठिनाइयों से जूझने का साहस, आत्मनिर्भरता का संदेश और श्रम की महत्ता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस उद्देश्य के अंतर्गत शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और जीवन से जुड़ा हुआ बनाने पर बल दिया गया है।
4. कबीर साहित्य के अध्ययन और शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना का विकास किया जाए। यह उन्हें भारतीय जीवन–दर्शन और परंपरा से जोड़कर आत्मगौरव का अनुभव कराता है, जो शिक्षा के मानवीय उद्देश्य को और अधिक सशक्त बनाता है।
5. शिक्षा का अंतिम और सर्वोच्च उद्देश्य यह है कि वह विद्यार्थियों को केवल ज्ञानवान ही नहीं बल्कि संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक भी बनाए। कबीर साहित्य में मानवतावाद की गहरी भावना विद्यमान है, जो आज की शिक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शोध का निष्कर्ष

इस शोध का निष्कर्ष यह इंगित करता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था जहाँ ज्ञान और तकनीकी दक्षता को सर्वोपरि मान रही है, वहीं मानवीय मूल्यों का संकट गहराता जा रहा है। विद्यार्थी ज्ञानवान तो बन रहे हैं, परंतु उनके जीवन में नैतिक अनुशासन, आत्मसंयम और सत्यनिष्ठा का अभाव दिखाई देता है। ऐसे समय में कबीर साहित्य शिक्षा में एक नई दिशा प्रदान करता है। कबीर की साखियाँ और दोहे विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि उन्हें जीवन जीने की कला, सादगी और निष्काम कर्म का संदेश भी प्रदान करते हैं। इस शोध ने यह सिद्ध कर दिया है कि कबीर साहित्य शिक्षा को मूल्यपरक और मानवकेंद्रित बनाकर आधुनिक समय की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है।

शोध से यह तथ्य भी उजागर हुआ कि कबीर साहित्य सामाजिक समानता और समरसता की भावना को विकसित करने में विशेष रूप से सहायक है। आधुनिक युग में समाज जातिगत, धार्मिक और सांप्रदायिक विभाजनों से पीड़ित है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य अधूरा रह जाता है। कबीर की शिक्षाएँ इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे सभी मनुष्यों को समान दृष्टि से देखने का आग्रह करती हैं। शोध ने यह स्थापित किया है कि कबीर साहित्य विद्यार्थियों के मन में भाईचारे, सहयोग और सौहार्द की भावना विकसित करता है और उन्हें लोकतांत्रिक मूल्यों की ओर उन्मुख करता है। शिक्षा जब इस दृष्टि को अपनाती है, तब वह समाज में वास्तविक समानता और न्याय की स्थापना करने में सक्षम बनती है।

यह शोध इस निष्कर्ष पर भी पहुँचा कि कबीर साहित्य शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने का वास्तविक

आधार है। आज की परीक्षा–प्रधान और अंक–केंद्रित शिक्षा विद्यार्थियों को व्यवहारिक जीवन की कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम नहीं बना पाती। कबीर साहित्य इस कमी को पूरा करता है क्योंकि इसमें आत्मनिर्भरता, श्रम की महत्ता और संघर्षशीलता की शिक्षा स्पष्ट रूप से मिलती है। शोध ने यह प्रमाणित किया है कि कबीर की वाणी विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविक समस्याओं से जूझने का साहस प्रदान करती है और उन्हें आत्मबल से परिपूर्ण करती है। इस प्रकार कबीर साहित्य शिक्षा को केवल पुस्तकीय न रखकर व्यवहारिक और जीवनोपयोगी बनाता है। कबीर साहित्य विद्यार्थियों में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का विकास करने में अत्यंत प्रभावी है। कबीर की वाणी भारतीय संस्कृति और जीवन–दर्शन का सार प्रस्तुत करती है, जो विद्यार्थियों को उनकी जड़ों से जोड़ने का कार्य करती है। शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को सांस्कृतिक आत्मगौरव का अनुभव कराना और उन्हें मानवीय संवेदनाओं से संपन्न बनाना है। इस शोध ने यह दिखाया कि कबीर साहित्य इस उद्देश्य की पूर्ति करता है और विद्यार्थियों को न केवल आधुनिक ज्ञानवान बनाता है, बल्कि उन्हें सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों से भी संपन्न करता है। इस प्रकार, शोध का निष्कर्ष यह है कि कबीर साहित्य की शैक्षिक उपयोगिता आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक और अपरिहार्य बनी हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कबीर की विचारधारा : गोविन्द त्रिगुणायत,साहित्य निकेतन, कानपुर, सं. 2024
2. कबीर चरित्र बोधःस्वामी युगलानन्द,लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेम प्रकाशन, बंबई, 1999
3. काव्य में रहस्यवाद रूपं. रामचन्द्र शुक्ल
4. नारदीय भक्ति सूत्र : गीता प्रेस गोरखपुर, 2009
5. निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोड्ट्री,: डॉ. बड़थ्थवाल
6. भक्तमाल नाभादास नवल किशोर प्रेस, लखनऊ 1951
7. संत कबीर : डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन लि० इलाहाबाद 1957
8. संत कबीर : माता प्रसाद गुप्त ज्ञान सागर प्रेस बम्बई 1989
9. हिन्दी की निर्गुण काव्यधारा और उनकी दार्शनिक पृष्ठभूमि : डा. गोविन्द त्रिगुणायत, प्रगति प्रकाशन, आगरा 1961
10. हिन्दी काव्यधारा :राहुल सांकृत्यायन, किताब महल इलाहाबाई 2004
11. कबीर साहित्य की प्रासंगिकता : डॉ. शुकदेव सिंह व संत गंगाशरण दास–कबीर वाणी प्रकाशन केन्द्र, वाराणसी
12. कबीर एण्ड हिज फालोवर्सः डा. कीथ–इण्डिया सीरीज श्रीमद्भागवत गीता, गीता प्रेस गोरखपुर
13. हिंदी साहित्य की भूमिका, डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन दिल्ली
14. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद